दिनांक :- 22-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम (डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम वर्ष (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

सेमेस्टर :- तृतीय

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- गुप्त काल

मानकुवर अभिलेख :- कुमारगुप्त प्रथम का इलाहाबाद में स्थित यह लेख बुद्धमित्र नामक बौद्ध भिक्षु द्वारा स्थापित बुद्ध की मूर्ति पर उत्कीर्ण है। इसमें कुमार गुप्त को महाराज कहा गया है।

तुमैन अभिलेख :- कुमारगुप्त प्रथम। इसमें कुमारगुप्त को उदयकालीन सूर्य की भाँति बतलाया गया है।

Scanned with CamScanner

जूनागढ़ अभिलेख :- स्कंदगुप्त. स्कंदगुप्त का महत्वपूर्ण अभिलेख है। इसमें हूण आक्रमण की सूचना मिलती है तथा सुराष्ट्र प्रांत में पर्णदत्त को राज्यपाल बनाने का उल्लेख मिलता है। इंदौर ताम्रपत्र अभिलेख :- स्कंदगुप्त

इस अभिलेख में सामंतवाद की चर्चा है तथा सूर्य की पूजा तथा सूर्य मंदिर में दीपक जलाने हेतु ग्राम दान की चर्चा है।

भितरी स्तंभलेख (गाजीपुर, उत्तर प्रदेश) : इस स्तंभ अभिलेख में पुष्यमित्रों तथा हूणों के साथ स्कंदगुप्त के युद्ध की चर्चा है।

एरण अभिलेख :- भानुगुप्त - इस अभिलेख में प्रथम बार सती प्रथा का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है, जो इस शासक के करद राजा गोपराज की मृत्यु तथा उसकी पत्नी के सतीहोने के संदर्भ में है।

सिक्के :- समुद्रगुप्त : स्वर्ण मुद्रा

① गरुड़ प्रकार :- मुख भाग पर अलंकृत वेशभूषा में राजा की आकृति अंकित तथा पृष्ठ भाग पर सिंहासन युक्त देवी के

पराक्रम शब्द अंकित है इस प्रकार के सिक्के नागवंशी राजाओं पर विजय के संकेतक हैं।

(2) धनुर्धारी प्रकार:- मुख भाग पर धनुर्धारी शासक की आकृति तथा पृष्ठ भाग पर सिंहवाहिनी देवी के साथ उस की उपाधि अप्रतिरथ:- अंकित है।

(3) परशु प्रकार:- मुख भाग पर परशु पकड़े राजा की आकृति, पृष्ठ भाग पर देवी की आकृति तथा उसकी उपाधि कृतान्त परशु: अंकित है।

(4) अश्वमेध प्रकार: मुख भाग पर यज्ञ यूप में बंधे घोड़े का चित्र तथा पृष्ठ भाग पर राजमहिषी (दत्तदेवी) की आकृति के साथ अश्वमेध पराक्रम अंकित है।

(5) व्याघ्रहनन प्रकार: मुख भाग पर धनुष बाण से व्याघ्र का आखेट करते समुद्र गुप्त तथा उसकी उपाधि व्याघ्र पराक्रम शब्द अंकित है। पृष्ठ भाग पर मकरवाहिनी

Scanned with CamScanner

गंगा की आकृति के साथ राजा गुप्त अंकित है।

⑥ वीणावादन :- मुख भाग पर वीणा बजाते राजा की आकृति तथा मुद्रा लेख - महाराजाधिराज श्री समुद्रगुप्त अंकित है। पृष्ठ भाग पर कार्नकोपिया लिये साध्वी की आकृति है।

रामगुप्त :- एरण तथा मिलास से प्राप्त ताम्र मुद्राएँ

चन्द्रगुप्त द्वितीय के सिक्के :- स्वर्ण, रजत, ताम्र

स्वर्ण सिक्के

① धनुधारी प्रकार :- सबसे अधिक इसी प्रकार के सिक्के प्राप्त हुए हैं। मुख भाग में धनुषबाण लिये राजा की मूर्ति गरुड़ ध्वज तथा देवश्री महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त तथा पृष्ठ भाग पर बैठी हुई लक्ष्मी के साथ राजा की उपाधि श्रीविक्रम अंकित है

② छात्रधारी प्रकार : मुख भाग पर आहुति डालते राजा तथा छात्रधारी बौना चित्रण है। पृष्ठ भाग पर कमलासीन लक्ष्मी तथा उपाधि विक्रमादित्य उत्कीर्ण है।

③ पर्यंक प्रकार - मुख भाग पर राजा वस्त्राभूषण धारण

किये पलंग पर बैठा है। पृष्ठ भाग पर सिंहासन पर बैठी हुई लक्ष्मी तथा उपाधि श्रीविक्रमः उत्कीर्ण है।

(4) सिंह निहंता प्रकार :- मुख भाग पर सिंह वध करते राजा तथा पृष्ठ भाग पर सिंह पर बैठी देवी दुर्गा की आकृति (5) अश्वारोही प्रकार : मुख भाग पर घोड़े पर सवार राजा की आकृति तथा मुद्रालेख परम भागवत महाराजाधिराज श्रीचन्द्रगुप्त अंकित है। पृष्ठ भाग पर बैठी देवी के साथ अजितविक्रम अंकित है।

स्वर्ण सिक्के को दीनार कहा जाता था।

चांदी के सिक्के :- ऐसे सिक्के के मुख भाग पर वक्ष तक राजा की आकृति तथा पृष्ठ भाग पर गरुड़ की आकृति के साथ श्रीचन्द्र गुप्त अथवा चंद्रगुप्त भगवान है।

कुमारगुप्त प्रथम :- स्वर्ण, रजत, ताम्र

इसी ने सर्वप्रथम गुप्त मुद्रा पर गरुड़ के स्थान पर मयूर

Scanned with CamScanner

को अंकित करवाना प्रारंभ किया।

विभिन्न सिक्के :- अश्वमेध प्रकार, व्याघ्रनिहंता प्रकार, अश्व शैली प्रकार, धनुर्धारी प्रकार, गजारोही प्रकार, कार्तिकेय प्रकार। विभिन्न मुद्राओं पर उसकी उपाधि महेन्द्रादित्य, श्री महेन्द्र, महेन्द्रसिंह, अश्वमेध महेन्द्र आदि अंकित है।

उत्पत्ति : के०पी० जयसवाल गुप्त मुख्यतः जाट थे तथा पंजाब के निवासी थे। एलन, एस के अयंगर, अल्तेकर, रोमिला थापर, रामशरण शर्मा : गुप्त वैश्य थे।

सुधाकर चट्टोपाध्याय, रमेशचन्द्र मजुमदार, गौरी शंकर ओझा : क्षत्रिय

एच आर चौधरी ब्राह्मण।

समुद्रगुप्त के प्रयाग, कुमारगुप्त के बिलसंड अभिलेख तथा स्कंदगुप्त के भीतरी अभिलेख से ज्ञात होता है कि गुप्तो का प्रथम ऐतिहासिक पुरुष श्रीगुप्त था तथा उसका उत्तर अधिकारी घटोत्कच गुप्त हुआ।

Scanned with CamScanner

प्रभावती गुप्त के पूना तथा रिद्धपुर ताम्रपत्राभिलेख में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम अधिराज (शासक) बताया गया है। स्कंदगुप्त के सुपिया लेख में गुप्तों की वंशावली घटोत्कच गुप्त से ही प्रारंभ होती है।

महत्वपूर्ण गुप्त शासक :- चन्द्रगुप्त (320-330) : महाराजाधिराज की उपाधि ग्रहण करने वाला प्रथम गुप्त शासक चन्द्रगुप्त प्रथम (319-335) लिखा है कि गुप्त तथा शक संवत के मध्य 241 वर्षों का अंतर था। चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपनी राजनीतिक स्थिति को मजबूत करने के लिए वैवाहिक संबंधों का सहारा लिया तथा तत्कालीन उत्तरी भारत के सशक्त गणराज्य लिच्छवि कुल की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया। इस के पश्चात् उसने महाराजाधिराज की उपाधि ली तथा सोने सिक्के चलाये तथा सिक्कों पर कुमारदेवी का नाम तथा आकृति खुदवाई।